

स्वास्थ्य का अमूल्य स्रोत- मानव मूत्र

डॉ. चंचलमल चोरडिया

मानव शरीर अपने आप में परिपूर्ण होता है। इसमें अपने आपको स्वस्थ रखने की क्षमता होती है। प्रकृति बालक के जन्म के साथ ही पालन-पोषण के लिए माता के स्तन में दूध प्रदान करती है, ठीक उसी प्रकार जीवन भर स्वास्थ्य रक्षा एवं रोग निवारण के लिए शरीर मूत्र उपलब्ध कराता है। प्रकृति का सनातन सिद्धान्त है कि जहाँ समस्या होती है उसका समाधान उसी स्थान के समीप अवश्य होता है। अतः जो रोग शरीर में पैदा होता है, उसका उपचार उसी शरीर में अवश्य होना चाहिए। दूसरी बात दुनिया में जब दो व्यक्ति एक जैसे नहीं हो सकते, तब दो रोगियों का उपचार एवं निदान एक जैसे कैसे हो सकता है? प्रत्येक व्यक्ति में रोग का परिवार अलग-अलग होता है। अतः उसके उपचार हेतु ली जाने वाली दवा भी अलग-अलग होनी चाहिए। जो कारखानों में बनी दवाओं के लिए संभव नहीं। तीसरी बात अच्छी चिकित्सा पद्धति सहज, सरल, सस्ती, स्वावलंबी, सर्वत्र, सभी समय उपलब्ध, अहिंसक, प्रभावशाली एवं स्थायी उपचार वाली होती है, जिसमें किसी भी प्रकार के दुष्प्रभावों की संभावना न हो। जो रोग में न केवल राहत ही देती हो अपितु विधिपूर्वक की जावे तो चन्द दिनों में ही स्थायी समाधान करने में सक्षम होती है। जिसको बालक, वृद्ध, महिला, पुरुष, शिक्षित-अशिक्षित, शरीर विज्ञान की विशेष जानकारी के बिना भी व्यक्ति सभी रोगों के उपचार हेतु आत्म विश्वास के साथ अपना सकता है। जिसका आधार होता है प्रकृति के सनातन सिद्धान्त एवं अनुभूतिपरक अतिम सुखद परिणाम। स्व मूत्र उपरोक्त सभी तथ्यों पर शतप्रतिशत खरा उतरता है। मानव मूत्र गंदा, खराब, विषैला, हानिकारक विजातीय तत्त्व नहीं है जैसा कि चंद स्वार्थी एवं अधूरे ज्ञान वाले व्यक्तियों के भ्रामक कथनों द्वारा बार-बार प्रचारित किया जाता है।

केवल भौतिक सत्यापन एवं तर्क अनुभूति के ज्ञान का पूर्ण मापदण्ड नहीं हो सकता-

डामर तंत्र में शिवजी ने पार्वती जी को स्वमूत्र के लाभ एवं उपयोग के बारे में विस्तार से समझाया। जो अनुभूतिपरक सनातन सत्यों पर आधारित है। इसी कारण स्वमूत्र को शिवाम्बु भी कहा जाता है। शिवाम्बु स्वयं द्वारा स्वयं की आवश्यकतानुसार रसायनिक प्रयोगों द्वारा निर्मित स्वास्थ्यवर्धक, जीवनोपयोगी दवा है। आज वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि शिवाम्बु शरीर से गुर्दा द्वारा रक्त के शुद्धिकरण से प्राप्त जीवनोपयोगी जल का वह भाग है, जिसमें शरीर के लिए उपयोगी सैकड़ों ऐसे तत्त्व होते हैं, जिनका शरीर तत्काल उपयोग नहीं कर पाता और उनको संचय करने तथा रखने के लिए शरीर में अलग से व्यवस्था नहीं होने से उसको विसर्जित करना पड़ता है। ऐसे उपयोगी तत्त्व जो आवश्यकता से ज्यादा होते हैं, शिवाम्बु के माध्यम से शरीर के बाहर आते हैं। जैसे जब कभी हमारे पास पैसे अधिक होते हैं, तत्काल जिनकी आवश्यकता न हो, तो हम उस धन को बैंक अथवा अन्य किसी के पास जमा करवा देते हैं, ताकि आवश्यकता पड़ने पर हम उन्हें पुनः प्राप्त कर सकें। इस चिकित्सा को सभी प्रमुख धर्मों के धर्म ग्रन्थों का समर्थन प्राप्त है।

स्वास्थ्यवर्धक अवयवों का खजाना मानव मूत्र-

शिवाम्बु में सैकड़ों उपयोगी खनिज, रसायन, हारमोन्स, एन्जाइम्स, विटामीन, क्षार, पोषक तत्त्व, विष नाशक पदार्थ तथा रोग निवारक, पीड़ा को शान्त करने वाले, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता और ताकत बढ़ाने वाले तत्त्व होते हैं, जो निष्क्रिय अंगों को सक्रिय बनाने, रक्त के शुद्धिकरण, पाचन एवं श्वसन तंत्र जैसे-विभिन्न शारीरिक क्रियाओं को सुव्यवस्थित, नियन्त्रित और संतुलित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मानव मूत्र में पाए जाने वाले सभी तत्त्व शरीर में विभिन्न अंगों के लिए गुणकारी होते हैं। मानव मूत्र सभी प्रकार के विष के प्रभाव को शमन करने वाला होता है। केवल मानव मूत्र ही ऐसा विषनाशक रसायन है जिससे किसी प्रकार का नुकसान नहीं होता। शिवाम्बु शरीर की रोग प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाता है जिससे इसके नियमित सेवन करने वालों को

किसी वायरस संबंधी रोग होने की संभावनाएँ क्षीण हो जाती है। गत वर्षों भारत में चिकनगुनिया, स्वायन फ्लू, डेंगू आदि विभिन्न छुआछूत बीमारियाँ फैली परन्तु शायद ही कोई शिवाम्बु साधक को वे परेशान कर सकी। अर्थात् शिवाम्बु शरीर के लिए रोग सुरक्षा कवच की भाँति काम करता है। पर्वतारोही एवं युद्ध में सैनिक अपने साथ रखे पानी के भण्डार में कमी होने पर वे प्रायः स्वमूत्र पीकर ही जीवित रहते हैं। मानवमूत्र शक्तिवर्धक रसायन की भाँति कार्य करता है। इसी कारण स्वमूत्र पान कर लम्बे उपवास करना अपेक्षाकृत सरल होता है।

इस चिकित्सा में रोग का निदान करते समय किसी चिकित्सक की आवश्यकता नहीं होती। प्रत्येक रोगी की आवश्यकतानुसार उसके स्वमूत्र में गुण होते हैं। अतः स्वमूत्र को विश्वसनीय घरेलू चिकित्सक कहा जा सकता है।

स्वमूत्र पान से दर्द को सहन करने की क्षमता बढ़ती है। इसी कारण जब अपराधियों को पुलिस दण्ड देती है, वे स्वमूत्र पी लिया करते हैं। शिवाम्बु द्वारा रोगोपचार के साथ स्वाध्याय, ध्यान, भक्ति, प्रार्थना आदि प्रवृत्तियों से उसकी प्रभावशालीता बढ़ जाती है। आज सैकड़ों आधुनिक चिकित्सा विशेषज्ञ, राजनेता, फिल्म अभिनेता, शिक्षाविद् अपने स्वास्थ्य हेतु स्वमूत्र का पान कर रहे हैं। जिस घर में स्वमूत्र चिकित्सा को पारिवारिक चिकित्सा के रूप में मान्यता मिल जाती है अर्थात् सभी परिजन अपना लेते हैं, वह परिवार बड़ा भाग्यशाली होता है। उस घर में चिकित्सकीय खर्च बंद हो जाता है, उपचार हेतु समय का दुरुपयोग समाप्त हो जाता है। घर के बालक-बालिका, प्रोढ़-प्रोढ़ा-वृद्धा सभी रोग मुक्त हो दीर्घायु को प्राप्त करते हैं।

आधुनिक चिकित्सा की दवाओं में बढ़ता शिवाम्बु का प्रयोग-

शिवाम्बु में उपकारक तथा रोग प्रतिकारक ऐसे निर्दोष रासायनिक तत्त्व मिले हैं, जो रोगी और निरोगी दोनों के लिये उपादेय होते हैं। फलस्वरूप विश्व के आधुनिक दवा निर्माताओं ने शिवाम्बु से प्राप्त जीवनोपयोगी आवश्यक तत्त्वों तथा अन्य भौतिक तत्त्वों के योग से कैन्सर, एड्स, टी.बी., हृदय रोग, दमा, नपुसंकता, गुर्दा आदि के असाध्य रोगों के उपचार हेतु बहुमूल्य प्राणदायिनी दवाइयों और इंजेक्शनों का व्यापक पैमाने पर निर्माण प्रारम्भ कर दिया है। हृदय रोगियों को दिया जाने वाला Urokinase, जो महिलाएँ गर्भवती नहीं होती, उनके लिए दी जाने वाली Profasi तथा अन्य असाध्य रोगों के लिए उपयोगी Serocruption Bromocriptine, Meprate, Ukidon, Pergonal (11MG), Metrodin HP Urofollitrophin (FHS) आदि अनेक दवाईयों के निर्माण में शिवाम्बु का प्रयोग होता है।

सभी रोगों की एक दवा:-

दुनियाँ में रोग मुक्त करने के लिए हजारों दवाईयाँ उपलब्ध हैं, जिनका रोगों की रोकथाम उपचार एवं परहेज के रूप में सेवन किया जाता है। सभी दवाओं का शरीर के अंगों पर अपना अलग-अलग प्रभाव अथवा दुष्प्रभाव पड़ता है। आँख के रोगों की दवा कान में नहीं डाली जा सकती। नाक में डालने वाली दवा मुँह से नहीं ली जा सकती, पीने वाली दवा त्वचा पर नहीं लगायी जा सकती। परन्तु शिवाम्बु स्वयं के द्वारा स्वयं के शरीर से उनके रोगों की आवश्यकतानुसार निर्मित ऐसी दवा है, जिसका उपयोग चाहें कान हों या आँख, नाक हों या मुँह, सिर दर्द हो या दांतों का दर्द, त्वचा के रोग हो अथवा पेट या प्रजनन सम्बन्धी शरीर के रोग ही क्यों न हों, सभी में स्वस्थ रहने हेतु बेहिचक प्रयोग में लिया जा सकता है। अतः शिवाम्बु को अमराली अथवा अमृत कहा जाए तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होती।

शिवाम्बु के प्रयोग की विधियाँ-

शिवाम्बु का प्रयोग अलग-अलग रोगों में अथवा रोकथाम हेतु अलग-अलग ढंग से किया जाता है। पीने के लिए प्रातःकालीन प्रथम शिवाम्बु सर्वश्रेष्ठ होता है। रात में निद्रा में व्यक्ति अपने मानवीय स्वभाव में ही होता है। कोई व्यक्ति

कितना भी क्रूर, हिंसक, क्रोधी, निर्दयी, अशान्त क्यों न हो, निद्रा में तो वह शांत और तनाव मुक्त ही होता है। अतः उस समय शरीर में जो हारमोन्स का निर्माण होते हैं, वे विशेष स्वास्थ्य वर्धक होते हैं। अतः प्रातःकालीन शिवाम्बु अधिक लाभदायक होता है। परन्तु जो शान्त, तनाव मुक्त, समभाव की साधना करने वाले, ध्यान अथवा भक्ति में सदैवलीन रहते हैं, वे कभी भी अपने शिवाम्बु का प्रयोग कर सकते हैं। अतः जैन संत एवं श्रावक जो किन्हीं कारणों से प्रातःकालीन (सूर्योदय से पूर्व के प्रथम) शिवाम्बु का नियमित सेवन न कर सकें, उन्हें स्वाध्याय, ध्यान, सामायिक, भक्ति के पश्चात् विसर्जित (सूर्योदय के पश्चात् उपलब्ध प्रथम) शिवाम्बु का सेवन करना चाहिए। मैंने स्वयं शिवाम्बु का सेवन विभिन्न परिस्थितियों में किया। जैसे भोजन के पूर्व, भोजन के पश्चात्, यहाँ तक भोजन के बीच में, बिना उपवास दिन भर के शिवाम्बु का इत्यादि, फिर भी किसी भी प्रकार के दुष्प्रभावों का अनुभव नहीं किया।

उपवास के साथ शिवाम्बु का सेवन करने से शरीर को ताकत मिलती है तथा दीर्घ तपस्या आसानी से की जा सकती है। अन्य समय का शिवाम्बु भी हानिकारक नहीं होता। दीर्घकालीन तपस्या करने वालों का मूत्र अत्यधिक प्रभावशाली होता है एवं जिसके सेवन से असाध्य रोगों में चमत्कारिक परिणाम आते हैं। इस संबंध में और अधिक शोध की आवश्यकता है। शिवाम्बु औषधि नहीं रसायन है। अतः इसका प्रयोग मेरे व्यक्तिगत अनुभव के अनुसार कोई भी और कभी भी कर सकता है, परन्तु जो नियम और विधि के अनुसार शिवाम्बु का सेवन करता है, उसको बिना नियमों का पालन सेवन करने की अपेक्षा शीघ्र लाभ होता है। इसी कारण विदेशों में जहाँ माँसाहारी एवं शराब का सेवन अधिक होता है, शिवाम्बु का पान करने वालों के किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव पड़ने के उदाहरण मेरी जानकारी में नहीं है, भले ही शिवाम्बु पान का लाभ उन्हें न मिला हो। शिवाम्बु पीने के बाद कम से कम आधा घंटे तक कुछ भी खाना पीना नहीं चाहिए। आँखों में, कान में, मुँह में, एनिमा आदि के रूप में ताजा शिवाम्बु को ही उपयोग में लेना चाहिये, परन्तु त्वचा सम्बन्धी रोगों में जितना पुराना शिवाम्बु होता है, उतना अधिक प्रभावशाली होता है। शिवाम्बु में कुछ समय पश्चात् जीवों की उत्पत्ति होने लगती है। अतः जैन संत एवं श्रावक पुराने शिवाम्बु का प्रयोग वर्जित मानते हैं। पांच मिनट ताजे उबाले हुए शिवाम्बु को ठण्डा कर पुराने शिवाम्बु के स्थान पर वे उपयोग में ले सकते हैं। असाध्य रोगों में शिवाम्बु पीना, रोगी के शिवाम्बु के इंजेक्शन लगाना, शिवाम्बु का एनिमा लेना, रोगग्रस्त निष्क्रिय भाग पर शिवाम्बु का मसाज करना अथवा उस भाग को शिवाम्बु से गीला रखना पड़ता है। लम्बी तपस्या करने वालों का शिवाम्बु जो असाध्य रोगी लम्बे उपवास न कर सकें उपचार हेतु बहुत अधिक लाभकारी होता है। व्यक्ति को शिवाम्बु का अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए अनुभवी शिवाम्बु चिकित्सक से इसके सेवन की विधि, परहेज एवं सावधानियों के बारे में विस्तृत परामर्श कर लेना चाहिए, अन्यथा अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होंगे, भले ही इसके दुष्परिणाम न भी हों।

मूत्रोपचार से पूर्व मूत्र परीक्षा आवश्यक नहीं- मूत्रपान हेतु विसर्जित मूत्र ही अधिक प्रभावशाली होता है। प्रायः शिवाम्बु के साथ अन्य औषधियाँ नहीं लेनी चाहिए परन्तु अगर किसी कारणवश दवा न छोड़ सकें तो मूत्रपान एवं दवा के बीच जितना अधिक अन्तराल रख सकें रखना अच्छा रहता है।

मूत्र कैसे कार्य करता है-

सर्वप्रथम यह शरीर की सफाई करता है। तत्पश्चात् अवरोधों को दूर करता है एवं अंत में रोग से उत्पन्न नाशक तत्वों के द्वारा गन्दे किये हुए रास्तों तथा प्रमुख अंगों का पुनःनिर्माण करता है। यह केवल फेंफड़ा, जिगर, दिमाग, हृदय आदि का पुनःनिर्माण ही नहीं करता बल्कि दिमाग की लाइनिंग एवं अन्य लाइनिंग की मरम्मत भी करता है।

स्वमूत्रपान के बाद शरीर की आंतरिक सफाई शुरू हो जाती है और भीतर जमा विजातीय पदार्थ शरीर से बाहर निकलने लगते हैं जो उपचार के शुभ संकेत हैं परन्तु इसे रोगी और उसके शुभचिंतक स्वमूत्रपान से उत्पन्न नया रोग मानकर इसे तुरन्त बंद करने की परामर्श देने लगते हैं, जो उचित नहीं। चन्द दिनों के शिवाम्बु के विधिवत उपचार से लक्षण नष्ट हो जाते हैं। अगर उचित समझें तो अन्य चिकित्सकों से परामर्श करने के स्थान पर अनुभवी शिवाम्बु चिकित्सक से परामर्श करें।

शिवाम्बु का सेवन कैसे प्रारम्भ करें ?

जो नीरोग है, परन्तु शरीर को स्वस्थ रखना चाहते हैं, वे केवल स्वमूत्र पान करके ही इस इच्छा को पूरी कर सकते हैं। हो सकता है कि वर्षों से बनी मानसिक अवरोध की प्रकृति एकाएक स्वमूत्र पीने की इजाजत न दे, तो एक-दो दिन में इसकी थोड़ी मालिश कर लें। तत्पश्चात् ताजा मूत्र से दाँतों को रगड़ें, कुल्ला करें, गरारा करें और एक चम्मच मूत्र पीएँ इस प्रकार कुछ ही समय में अरुचि खत्म होने पर एक कप पीना शुरू करें। सुबह का मूत्र थोड़ा नमकीन होता है। अतएव दो एक दिन सुबह का नाश्ता करने के एक घण्टे बाद, उपलब्ध मूत्र जो स्वच्छ और कम खारा होगा। उसे पीएँ। स्वस्थ मनुष्य के लिए सुबह का ताजा मूत्र सबसे गुणकारी है। मूत्रपान प्रारम्भ करने के बाद इसमें तीखापन या खारापन क्रमशः कम होता जाता है। आप अनुभव करेंगे कि आप के शरीर में स्फूर्ति का संचार हो रहा है, दैनिक कार्यों में भी थकावट नहीं मालूम पड़ेगी।

शिवाम्बु का स्वभाव पर प्रभाव:-

शिवाम्बु में विभिन्न प्रकार के हारमोन्स होने से इसके सेवन से मानव का स्वभाव बदलता है। व्यक्ति होशियार एवं मेधावी बनता है। स्मरण शक्ति तेज होती है। बुद्धि विकसित होती है। तनाव घटता है। निर्भयता एवं साहस विकसित होता है। चेहरे का तेज, वाणी में जोश, इन्द्रियों की क्षमता बढ़ती हैं। मनोबल दृढ़ होता है। जीवन में उत्साह बना रहता है। मन में शांति बढ़ती है। मांसाहारी को शाकाहारी बनने तथा दुर्व्यसनी को निर्व्यसनी बनने की स्वतः प्रेरणा मिलने लगती है और व्यक्ति सद्गुणों की तरफ प्रेरित होने लगता है। मन की शांति बढ़ती है, जिससे व्यक्ति का चिन्तन एवं विचार प्रभावित होते हैं। साधक, ध्यान, तप आदि आत्म-साधना में प्रगति करने लगता है। अर्थात् शिवाम्बु का विधिवत् सेवन करने से शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास में मदद मिलती है, जिसका विस्तृत विवेचन डामर तंत्र में किया गया है, जो अतिशयोक्ति नहीं परन्तु अनुभूति परक सनातन सत्य है।

शिवाम्बु और भोजन-

शिवाम्बु का हमारे भोजन एवं भावों से सीधा सम्बन्ध होता है। शिवाम्बु में प्रायः वे सभी तत्त्व होते हैं, जो हमारे भोजन में होते हैं तथा भावों के अनुसार हारमोन्स भी होते हैं। शिवाम्बु का स्वाद भोजन के अनुसार बदलता रहता है। शिवाम्बु के स्वाद एवं सुगंध के अनुसार शरीर में रोग का सही निदान किया जा सकता है। स्वादहीन, सुगंध हीन, प्रातःकालीन प्रथम विसर्जित होने वाला शिवाम्बु अच्छे पाचन एवं स्वास्थ्य का प्रतीक होता है। यदि शिवाम्बु का प्रयोग करते समय भोजन के साधारण नियमों का पालन किया जाये, मैदे, शक्कर एवं नमक का कम उपयोग किया जाये, तले, भुनें, चरखे, गर्म मसालों से मुक्त चटपटे भोजन से बचा जावे तथा सात्त्विक प्राकृतिक ऊर्जा से परिपूर्ण भोजन किया जाये तो, पुराने, असाध्य, मरणान्तिक रोगों में भी चमत्कारी परिणामों से रोगों में राहत मिलती है। मूत्र जब तक शरीर में रहता है उसके गुण धर्म आम्लिक होते हैं जो विसर्जित होने के पश्चात् क्षारीय बन जाते हैं। अतः आम्लिक भोजन करने वालों को भोजन के पश्चात् शिवाम्बुपान विशेष लाभप्रद होता है।

शिवाम्बु सेवन की मात्रा-

शिवाम्बु गर्म प्रकृति का होने से इसको पीने की एक जैसी विधि का निर्धारण न्यायसंगत नहीं हो सकता। सर्दियों की मौसम में अथवा कफ प्रकृति वाले उसका आवश्यकतानुसार स्वविवेक के साथ अधिकाधिक प्रयोग कर सकते हैं। वर्षा की

मौसम में शिवाम्बु की मात्रा सर्दी की अपेक्षा थोड़ी कम तथा गर्मी की मौसम में तथा पित्त प्रकृति वालों को शिवाम्बु का पान कम करना चाहिए।

जो व्यक्ति दुर्व्यसनों से ग्रसित हैं, अथवा किसी प्रकार की दवा ले रहा है अथवा जिसका खानपान सात्त्विक नहीं है, उसको शिवाम्बु का अधिक सेवन करना चाहिए, ताकि थोड़े समय में ही उसके दुर्व्यसन छूट जाते हैं, दवा बंद हो जाती है तथा सात्त्विक खाने के प्रति आकर्षण बढ़ने लगता है। इसी प्रकार जिनके शरीर में मोटापा अथवा चर्बी ज्यादा है, उन्हें शिवाम्बु का सेवन अधिक मात्रा में करना चाहिये।

विविध चिकित्साओं के साथ शिवाम्बु का प्रयोग-

हथेली और पगथली में शिवाम्बु का मर्दन करने से वहाँ जमें विकार अपना स्थान छोड़ने लगते हैं। अतः उसके पश्चात् किया गया एक्जुप्रेसर उपचार, अधिक प्रभावशाली हो जाता है। शिवाम्बु को चुम्बक पर रखने से उसमें चुम्बकीय गुण, रंगीन बोतलों में धूप में रखने से अथवा अन्य विधि द्वारा रंगों की प्रकाश किरणों डालने से रंगों के गुण, पिरामिड पर रखने से, मंत्रोपचार द्वारा भावित करने से, एनर्जी स्टीक घूमाने अथवा स्फटिक के पास रखने से, अतिरिक्त ऊर्जा का संचय होने से, उसकी प्रभावशालीता बढ़ जाती है, तथा एक साथ समग्र चिकित्सा का लाभ मिलने लगता है।

शिवाम्बु से होने वाले तात्कालिक उपचार एवं अन्य उपयोग-

1. हिलते हुए दांतों को पुनः मजबूत करने के लिये तथा दांतों संबंधी अन्य रोगों में ताजे शिवाम्बु को मुँह में भरकर दिन में तीन-चार बार पंद्रह से बीस मिनट तक घुमाने से अधिकांश दांतों के रोग ठीक हो जाते हैं।
2. आंखों के सभी रोगों में, नेत्र ज्योति बढ़ाने के लिए, चशमें के नम्बर कम करने के लिए, रोजाना तीन-चार बार आंखों को ताजे शिवाम्बु को तीन-चार मिनट ठंडा होने के पश्चात् आई कप से धोने, साथ ही नाक से नेति एवं नाक से शिवाम्बु पीने से चमत्कारी परिणाम आते हैं।
3. यदि रोगी का पेशाब बंद हो तो, अन्य स्वस्थ व्यक्ति का शिवाम्बु पिलाने से मूत्र में आया अवरोध दूर हो जाता है। उसके पश्चात् रोगी अपने स्वयं के शिवाम्बु का सेवन कर सकता है। यथासंभव पुरुष को पुरुष एवं महिलाओं को स्वस्थ महिला का ही शिवाम्बु पीलाना चाहिए।
4. सांप, बिच्छु अथवा शरीर में अन्य किसी भी प्रकार का जहर फैलने पर शिवाम्बु पीने से विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है। यदि रोगी का शिवाम्बु उपलब्ध न हों तो अन्य स्वस्थ व्यक्ति का शिवाम्बु तुरंत पिलाया जा सकता है।
5. रोगी को जहाँ तक हो, अपने शिवाम्बु का ही सेवन करना चाहिये, भले ही मधुमेह के कारण मूत्र में सुगर अथवा कैंसर आदि रोगों के कारण, उसमें पस अथवा बदबू कितनी ही क्यों नहीं आती हो।
6. शिवाम्बु में शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता होने के कारण विदेशों में अनेकों शल्य चिकित्सक, शल्य चिकित्सा प्रारम्भ करने से पहले एवं बाद में शिवाम्बु का इंजेक्शन देते हैं। बच्चों को शिवाम्बु पिलाने से उनको चेचक, पोलियो, डी.पी.टी., हेपेटाईस जैसे टीकों के लगाने की आवश्यकता नहीं होती और न टीकों के दुष्प्रभावों का खतरा ही रहता है।
7. सभी असाध्य रोगों में चाहे कैंसर हों अथवा एड्स या एंथ्रेक्स शरीर की प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाने हेतु शिवाम्बु का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, जो शिवाम्बु के चमत्कारी प्रभावों का प्रतीक है। जिस प्रकार चूने की डली पर पानी डालने से वह बिखरती है उसी प्रकार कैंसर की गठानें शिवाम्बु के सम्पर्क में आकर बिखरने लगती हैं जो सब मल के साथ बाहर निकलने लगती हैं। अतः इस विधि में किसी भी प्रकार के रोग में शल्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं होती।

8. शिवाम्बु सर्वोत्तम एन्टीबायोटिक, सेविंग क्रीम, सेविंग का साबुन, सेविंग लोशन, बालों को मुलायम बनाने वाला शैम्पू, दांतों को साफ करने वाला दंत मंजन है। इसी कारण विदेशों में सौंदर्य प्रसाधनों तथा दंत मंजनों में शिवाम्बु का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। आज सौंदर्य प्रसाधन के नाम पर जीवों पर जो निर्दयता, क्रूरता, हिंसा हो रही है उन सबका शिवाम्बु एकमात्र सस्ता, सुन्दर, प्रभावशाली दुष्प्रभावों से रहित अहिंसक विकल्प है।
9. विदेशों में सौंदर्य प्रसाधन, विलास की सामग्री, वस्त्रों को डाई करने में मूत्र का प्रयोग होता है। इंग्लैण्ड के रसायन विशारदों ने मूत्र के क्षारों से श्रेष्ठ प्रकार के नहाने के साबुन तथा कीमती क्रीम तैयार किए हैं। अमेरिका के श्री जे.एन. लिलेज ने अपनी पुस्तक “दी आर्ट ऑफ क्रैफ्ट एण्ड डाइंग में लिखा है कि काटन, लिनेन, सिल्क एवं उन के फैब्रिक्स की मूत्र द्वारा डाइ करने से रंग धूप में रगड़ने से या धोने से नहीं छूटता और कुछ रसायन मिलाने से कई अच्छे चमकदार रंग डाई की जाती है।
10. उष्णपान करने वालों को प्रातः प्रथम शिवाम्बु का पान करना चाहिए। उसके कुछ समय पश्चात् उष्णपान कर पेट का हलका व्यायाम करने से अथवा मूल और उड्डायन बंध लगाने से आंतों की सफाई प्रभावशाली ढंग से हो जाती है।
11. शिवाम्बु विषनाशक एवं रोग प्रतिकारात्मक क्षमता होने के कारण मूत्र चोट, घाव, जलने एवं चर्म रोग में प्रभावकारी उपचार प्रदान करता है। प्रभावित अंग पर बाहर से लगाने पर यह खून बहना बंद कर देता है, दर्द मिटाता है एवं तेजी से घाव भरता है। स्वमूत्र से अच्छे हुए घावों में निशान नहीं रहते।
12. श्वसन संबंधी रोगों में स्वमूत्र नाक द्वारा पीने से रोग तो दूर होता ही है, प्रदूषित वायु के दुष्प्रभाव का प्रतिकूल असर पड़ने की संभावना क्षीण हो जाती है। शुरु में नाक से मूत्र पीने में कठिनाई का अनुभव अवश्य होगा। इसलिए पहले नाक से कुछ दिनों तक खींचना चाहिए। धीरे-धीरे अभ्यस्त हो जाने पर एक वक्त का मूत्र नाक से ही पीने का प्रयास करें।

शिवाम्बु के प्रति जनजागरण:-

महाराष्ट्र के कोल्हापुर में भारत का प्रथम शिवाम्बु चिकित्सालय कार्यरत है। गुजरात, महाराष्ट्र और आगरा में भी शिवाम्बु शोध संस्थान कार्यरत हैं तथा सैकड़ों अनुभवी शिवाम्बु प्रेमी रोगियों को अपने अनुभव के आधार पर परामर्श देकर मानव सेवा के कार्य में जुटे हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय का अपेक्षित सहयोग एवं प्रोत्साहन न मिलने के बावजूद आज शिवाम्बु पर राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों के आयोजन नियमित रूप से हो रहे हैं जिसमें शिवाम्बु पर देश के मूर्धन्य अनुभवी चिकित्सक अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं एवं पीड़ित मानवता की सेवा में अपना अमूल्य योगदान देते हैं। इसी उद्देश्य से आचार्य हस्ती अहिंसा शोध संस्थान एवं अखिल भारतीय शिवाम्बु संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में 19 एवं 20 अप्रैल 2014 को जोधपुर में छठ्ठा राष्ट्रीय शिवाम्बु सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है जिससे स्वयं को स्वयं द्वारा स्वस्थ रखने वालों को आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त हो सके।

शिवाम्बु पर आज सैकड़ों पुस्तकें एवं आलेख विश्व भर में विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित हो रहे हैं, फिर भी पूर्वाग्रसित मान्यताओं तथा स्वमूत्र के प्रति घृणा भावना के कारण जनसाधारण व्यापक रूप से इस पद्धति को नहीं अपना पाया है।

सरकारी उपेक्षा एवं हमारा दायित्व:-

सुलभ और गुणकारी, आरोग्य का साधन शिवाम्बु अपने अन्दर रखते हुए उससे हम उसी प्रकार वंचित हैं जैसे हमारे अन्दर में परमात्मा मौजूद है और हम उससे अपरिचित रहते हैं जैसे हिरन की नाभि में कस्तूरी होती है, परन्तु उसे उसका मालूम नहीं होता। भारत जैसे गरीब देश के लिए शिवाम्बु जैसी सरल, सस्ती, अहिंसक, वैज्ञानिक, प्रभावशाली, सहज, सुलभ, स्वावलम्बी पद्धति जो सबके लिए सभी स्थानों पर उपलब्ध हो, परन्तु सही जानकारी एवं भ्रामक धारणाओं के कारण

उपयोग में न ली जाए, हमारा दुर्भाग्य ही समझना चाहिए। अतः मानवतावादी दृष्टिकोण वाले सभी स्वास्थ्य प्रेमियों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि, जन-जन तक शिवाम्बु सम्बन्धी जानकारी पहुँचावे तथा गरीब, अशिक्षित स्वास्थ्य प्रेमियों को रोग मुक्त जीवन व्यतीत करने के पुनीत सेवा कार्य में अपनी अहं भूमिका निभाए। “शिवाम्बु चिकित्सा में रोग के निदान की भी आवश्यकता नहीं होती। क्योंकि शरीर में रोगों की आवश्यकतानुसार ही इसका निर्माण होता है। शिवाम्बु का सम्यक् उपयोग अपने आप में चिकित्सा है तथा आधुनिक चिकित्सा में कार्य में ली जाने वाली अनेकों दवाइयों का एक मात्र प्रभावशाली विकल्प।”

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन : 0291-2621454,9414134606(मोबाइल)

E-mail - cmchordia.jodhpur@gmail.com

Website: www.chordiahealthzone.in

मानव शरीर अपने आप में परिपूर्ण होता है। इसमें अपने आपको स्वस्थ रखने की क्षमता होती है। आवश्यकता है अपनी क्षमताओं को पहचानने की, समझने की तथा आवश्यकतानुसार उसका सही उपयोग करने की।

अधिकांश रोगियों का इलाज उनके घर पर ही, उनकी ही शरीर से प्राप्त दवा से बिना किसी आर्थिक व्यय के किया जा सके।

प्रकृति ने शिशु के पालन-पोषण के लिये माता के स्तन में दुग्ध प्रदान किया है, ठीक उसी प्रकार स्वास्थ्य रक्षा एवं रोग निवारण के लिये उसने मानव एवं पशु शरीर में मूत्र प्रदान किया है।

जैसे पैदा होते ही शिशु को माँ का दूध पिलाना जरूरी और हितकारी होता है वैसे ही शिशु को जन्म लेते ही स्वमूत्र पिला दिया जाए तो वह कई रोगों से बचा रहकर स्वस्थ, निरोग और हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला हो सकेगा।

मानव मूत्र में पाए जाने वाले सभी तत्त्व शरीर में विभिन्न अंगों के लिए गुणकारी है। मानव मूत्र सभी प्रकार के विषों का शमन करने वाला है। केवल मानव मूत्र ही ऐसा विषधन रसायन है जो बिल्कुल ही नुकसान नहीं पहुँचाता।

एक मानव का अनुभव ज्ञान होता है और समुदाय या समूह द्वारा प्राप्त अनुभव विज्ञान होता है।

पर्वतारोही एवं युद्ध में सैनिक अपने साथ रखे पानी के भण्डार में कमी होने पर प्रायः स्वमूत्र पीकर ही जीवित रहते हैं।

स्वमूत्र चिकित्सा अति प्राचीन है। जैन, बौद्ध, आयुर्वेद, बाइबिल, इस्लाम, यहूदी जैसे पौराणिक ग्रन्थों में इसका उल्लेख मिलता है। इस चिकित्सा पद्धति को सभी प्रमुख धर्मों के धर्म-शास्त्रों का समर्थन प्राप्त है। डामर तंत्र में शिवजी ने पार्वती जी को शिवाम्बु कल्प यानी स्वमूत्र के लाभ एवं उपयोग के तरीकों के बारे में विस्तार से समझाया था, इसी कारण स्वमूत्र को शिवाम्बु भी कहा जाता है। शास्त्र की उक्तियाँ झूठी नहीं होती, क्योंकि वे वर्षों के अनुसन्धान व अनुभूति की तथ्यात्मक व्याख्या होती हैं।

उसी प्रकार शिवाम्बु गंदा, खराब, विषैला, हानिकारक, विजातीय तत्त्व नहीं है, अपितु स्वास्थ्यवर्धक, जीवनोपयोगी शरीर द्वारा निर्मित रासायनिक प्रयोगों द्वारा बना जल है।

मानव मूत्र मल या जहर नहीं है जैसा कि बार-बार कहा जाता है परन्तु स्वयं द्वारा स्वयं की आवश्यकतानुसार निर्मित रोगोपचार की दवा है-शिवाम्बु।

शिवाम्बु शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है जिससे शरीर में वायरस एवं छूआछूत संबंधी रोग होने की संभावनाएँ समाप्त हो जाती हैं। इसी कारण नियमित शिवाम्बु का सेवन करने वालों को वर्तमान में चारों तरफ से प्रदूषित वातावरण में जीवन जीते हुए भी छूआछूत को रोग परेशान नहीं कर सकते।

मानव मूत्र शक्तिवर्धक रसायन की भाँति कार्य करता है। इसी कारण स्वमूत्र पान कर लम्बे उपवास अपेक्षाकृत सरलतापूर्वक किए जा सकते हैं। दीर्घकालीन तपस्या करने वालों का मूत्र अत्याधिक प्रभावशाली होता है। एवं उसके सेवन करने से अच्छे परिणाम शीघ्र प्राप्त होते हैं।

यह उपचार प्रभावशाली, दुष्प्रभावों से रहित, बिना किसी खर्च वाला, सुरक्षित एवं सरल है। अतः स्वस्थ हो या रोगी, बालक हो या वृद्ध, गर्भवती महिलायें हो अन्य रोगों से ग्रस्त महिलाएँ सबके लिये स्वमूत्र उपचार सुरक्षित है।